उपसंहार

उपसंहार

वाल्मीकि कृत 'रामायण' से ही रामाख्यानक रचनाओं का विकास हुआ है, इसे प्रायः रामकथा के स्रोतान्वेषक सभी विद्वान् एक स्वर स्वीकार करते हैं। स्वयं गोस्वामी तुलसीदास जी ने बालकाण्ड के प्रारंभ में लिखा है–

'बन्दौं मुनि पद कंज, रामायन जेहि निरमयउ'[1]–मैं अब वाल्मीकि मुनि के चरण कमलों की बंदना करता हूँ जिन्होंने रामायण की रचना की। इसके बाद पूरी रामकथा का विस्तार विभिन्न मध्यकालीन भारतीय भाषाओं और आधुनिक भारतीय भाषाओं में हुआ। आज भी सहस्रों काव्यनद और निर्झर उससे निर्गमित हो प्रवाहित हो रहे हैं। रामाख्यानक रचनाओं के अध्ययन से पता चलता है कि इस आख्यान के वर्णन क्रम में 'कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य' है। राम के अनन्त गुण और उनकी कथा के विस्तार की अनन्तता को गोस्वामीजी तुलसीदास ने इस प्रकार व्यक्त किया है कि समस्त विश्व की नदियों के बालू को गिना जा सकता है लेकिन राम के गुणों की गणना संभव नहीं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'मानस' में घटित चित्रकूट सभा की कार्यवाही को लक्षित कर कहा है– 'इस पुण्य समाज के प्रभाव से चित्रकूट की रमणीयता में पवित्रता भी मिल गयी। उस समाज के भीतर नीति, स्नेह, शील, विनय, त्याग आदि संघर्ष से जो धर्म ज्योति फूटी उससे आस–पास का सारा प्रदेश जगमगा उठा। उसकी मधुर स्मृति से आज भी वनस्थली परम पवित्र है। 'मानस' में वह सभा एक आध्यात्मिक घटना' है।[2] 'वाल्मीकि रामायण' में कुल पन्द्रह सर्गों में यह कथा वर्णित है और रामचरितमानस में कुल 85 दोहे अयोध्याकाण्ड में इसके लिए प्रयुक्त हुए हैं। कथा बस इतनी ही है चित्रकूट में राम से भरत की भेंट हो जाती है। वाल्मीकि श्रीराम के रहने के लिए इस स्थान को सर्वाधिक उपयुक्त मानते हैं। भरत राम से अयोध्या लौटकर राज्य करने का आग्रह करते हैं पर राम उसे अस्वीकार कर सारे पुरवासियों सहित उन्हें लौटा देते हैं। 'वाल्मीकि रामायण' में रामकथा से सम्बद्ध अनेक स्थलों के वर्णन में चित्रकूट का विशिष्ट महत्त्व है। कालिदास के रघुवंश और भवभूति के 'उत्तर रामचरित' में चित्रकूट तक जाने वाले कालिंदी तट पर स्थित मार्ग का उल्लेख है। 'रामायण' के अनुसार रामभद्र ने पयस्विनी या मंदाकिनी के तट पर स्थित इस पहाड़ी पर निवास किया था।

चित्रकूट पर्वत एवं उससे संलग्न वन्य सम्पदा तथा उसकी रमणीयता का वर्णन पुराणों, जातक ग्रंथों, जैन साहित्य तंत्र ग्रंथों में भी प्राप्त है। पद्मपुराण के तीर्थ माहात्म्य में चित्रकूट का उल्लेख है। भागवत पुराण में चित्रकूट एक मनोहारी चित्र के रूप में मिलता है। कालिका पुराण में कज्जल नामक एक पर्वत को चित्रकूट के पूर्व में स्थित बताया गया है। जैन पद्मपुराण के अनुसार राम एवं लक्ष्मण मालव देश में चित्रकूट पहाड़ी के पाद तक आए थे। 'ललित विस्तर' में इसका वर्णन रमणीक तथ निष्कलुष स्थल के रूप में प्राप्त होता है। एक जातक के अनुसार धर्मानुसार राज्य का शासन करने के लिए आदिष्ट एक राजा

ने इस पर्वत के लिए प्रस्थान किया था। वृहद् संहिता में भी चित्रकूट का वर्णन मिलता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि रामकथा विषयक आख्यानों तथा इतर साहित्यिक ग्रंथों में चित्रकूट से सम्बन्धित प्रभूत आधार सामग्री उपलब्ध होती है। प्रायः सभी कवियों ने इसकी रमणीयता की सराहना की है और चित्रकूट संज्ञक काव्यों में रमणीयता के साथ पवित्रता का तत्व भी समाविष्ट हुआ है। राम भरत का मिलन जैसा 'भायप भगति' का उदाहरण निश्चय रूप से अन्यतम एवं स्पृहणीय बन गया है।

हिन्दी साहित्य में यद्यपि रहीम आदि ने भी इसका वर्णन किया है किन्तु स्वतंत्र रूप से ग्रंथ आधुनिक युग में ही लिखे गये। यद्यपि इस पर कोई महाकाव्य नहीं लिखा गया, खण्ड काव्य तक ही इसकी सीमा निश्चित रही। गुप्तजी जैसे प्रबंध कवि भी केवल साकेत समाज के चित्रकूट में चलकर देखने की कल्पना मात्र करके रह जाते हैं। यद्यपि उनके समय में भी 'विद्याभूषण विभु' ने चित्रकूट चित्रण लिखकर वहाँ की छवियों का दर्शन कराया था। इस प्रकार परम्परा से प्राप्त इस प्रख्यात प्रसंग को आधुनिक युग में विशेष रूप से विवेच्य बनाया गया। इसमें कवियों ने अपनी कल्पना के माध्यम से समसामयिक युग की चिन्तन धारा को बोध–चेतना आदि के अनुरूप सर्वथा नवीन रूप में इसें गठित किया। अतः पारम्परीण रूप में होकर भी यह किंचित परिवर्तित और नवीन हो गई है। सर्वप्रथम कवि प्रसाद ने चित्रकूट पर एक कथा काव्य की योजना बनाई। 'कानन कुसुम' में उनकी चित्रकूट शीर्षक कविता संगृहीत है। इसमें कवि ने मार्मिक घटनाओं और संदर्भों का चयन किया है। इसमें राम–भरत मिलन का दृश्य अंकित किया गया है। इस प्रसंग का दूसरा उद्देश्य है राम और लक्ष्मण की स्वभाव की भिन्नता प्रकट करना। ऐसे महाकवि निराला ने 'तुलसीदास' में चित्रकूट का वर्णन किया है।

प्रस्तुत प्रबंध चित्रकूट स्थल पर केन्द्रित काव्यों पर आधारित है। इन चित्रकूट संज्ञक काव्यों में लक्ष्मीकांत वर्मा कृत चित्रकूट चरित, मोहन लाल गुप्त 'चातक रचित 'चित्रकूट', रामेश्वरदयाल दुबे कृत 'चित्रकूट' विद्याभूषण विभु रचित 'चित्रकूट चित्रण' तथ रामानन्द द्विवेदी शास्त्री द्वारा रचित्र 'चित्रकूट' विवेचन के आधार बने हैं। इस संदर्भ में डा0 देवकीनन्दन श्रीवास्तव रचित 'चित्रकूट के पथ पर' नामक लम्बी कविता का भी महत्त्व है। किन्तु इस प्रबंध में केवल पाँच कृतियों का ही विविध–ढंग से आलोड़न किया गया है। खड़ी बोली की कविता में जो आधुनिकता का समावेश हुआ और कविता की अन्तवर्ती चेतना में जो बदलाव आया, छन्द बदले, इन बदले हुए साहित्यिक मूल्यों के साथ आधुनिकता की एक लहर भी आई। आधुनिक हिन्दी साहित्य में पारम्परीण स्रोतों वाले विषय वस्तु के काव्य ग्रंथ भी समानान्तर गति से रचे गये। चित्रकूट संज्ञक इन पाँचों कृतियों का स्थान इस दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत इन पाँचों कृतियों का सामान्य परिचय दिया गया है। इसमें कृतियों के रचना काल के साथ कृतिकार के समर्पण निवेदन आदि के आधार पर उस काल को साहित्यिक दृष्टि से विश्लेषित किया गया है। जैसे मोहनलाल गुप्त 'चातक' को इस काव्य को लिखने में 'रामायण', 'मानस' और 'साकेत' से प्रेरणा मिली। किन्तु उससे भी ज्यादा वाल्यकाल में उनकी माँ ने प्रेरणा दी जो रामायण की

कहानियाँ सुनाती थी, 'मानस' का पाठ करती थी और हर्ष विभोर होकर नृत्य करने लगती थी और कभी शोक द्रवित होकर अश्रुपात करने लगती थीं। कवि के मन में ऐसी अनुभूति हुई कि इस प्रयोगवादी युग में पौराणिक आख्यानों के माध्यम से जन जागृति का प्रयास किया जा सकता है।[3]

ये काव्य चित्रकूट तीर्थ की सांस्कृतिक महत्ता के साथ इसकी आध्यात्मिक महिमा और नैसर्गिक सुषमा का आख्यान है। चित्रकूट धाम भारत का हृदय बिन्दु है। आधुनिक कवियों ने इस महिमाशाली तीर्थ के प्रति प्रेम और श्रद्धा का भाव भर दिया है। 'गीतावली' और 'विनयपत्रिका' में गोस्वामीजी ने जिस चित्रकूट के अन्तः–बाह्य का वर्णन किया है, उसको आधुनिक कवियों ने अपनी मानवीय दृष्टि के आधार पर बड़ी ही सतर्कता के साथ उभारा है। इन आलोच्य कवियों ने अपना प्रकृति प्रेम, काव्य रसिकता और भक्ति का अनुपम त्रिपुट प्रस्तुत किया है। वहाँ के झरने मंदाकिनी की पवित्र धारा और वन की शोभा ऐसी सुवर्णित है कि उसे पढ़कर काव्य रसिकों का मन उस स्थान के दर्शन के लिए लालायित हो उठता है। इन कवियों का उद्देश्य चित्रकूट के तीर्थ स्थान के रूप में चित्रित करना, बालक–बालिकाओं के हृदय में धार्मिक भाव उत्पन्न करना, राम और भरत के भ्रातृ–प्रेम को समाज में जाग्रत करना, कैकेयी के कलंक को धोना, उर्मिला माण्डवी आदि के चरित्र को नये ढंग से सामने लाना, ऋषियों के जीवन को धर्म के अंग के रूप में स्वीकार करना, राम के जीवन को तपस्यामय बनाकर संस्कारित करना तथा पात्रों की मानसिकता का आधुनिक अन्तर्द्वन्द्व स्पष्ट करते चलना है।

इन सभी कृतियों में रामानन्द शास्त्री, रामेश्वरदयाल दुबे और लक्ष्मीकांत वर्मा की कृतियाँ विशेष रूप से परिगणनीय हैं। रामेश्वरदयाल दुबे कृत 'चित्रकूट' के सम्बन्ध में प्रख्यात कवियित्री महादेवी वर्मा ने ठीक ही लिखा है– 'प्राकृतिक परिवेश में 'चित्रकूट' के कवि ने अपने पात्रों के चरित्र को उनके कथन, उपकथन द्वारा इस प्रकार उभारा है कि वे हमारे निकट विशिष्ट न होकर सामान्य और आत्मीय बन जाते हैं। उनकी कल्पना का उपयोग पात्र की मानसिकता तथा उसके अन्तर्द्वन्द्व को स्पष्ट करने वाला है। 'चित्रकूट चरित' के रचयिता लक्ष्मीकांत वर्मा को हनुमत् कृपा से वर्णित पात्र और घटना को रूपायित करने की शक्ति प्राप्त हुई है। वस्तु–विधान के अन्तर्गत चित्रकूट प्रसंग रामकथा के आलोक में सभी आलोच्य काव्यों की कथावस्तु का वर्णन हुआ है। कविवर 'विभु' का 'चित्रकूट चित्रण' मूलतः प्रकृति वर्णन प्रधान सरस काव्य रचना है। इसे पाँच छवियों में बाँधा गया है। प्रथम में चित्रकूट स्थल का वर्णन विन्ध्याचल पर्वत के अंश रूप में किया गया है। यहाँ चित्रकूट को चित्रपुरी की संज्ञा दी गई है। चूँकि वहाँ चित्रवाज अर्थात् मुर्गा के बांग देने से दिनचर्या प्रारंभ होती है। पुनः इसके पर्यटन हेतु श्रेष्ठ ऋतु के रूप में कवि ने पावस ऋतु का उल्लेख किया है और सभी दर्शनीय स्थलों का विस्तृत वर्णन किया है। फिर चित्रवन की व्याख्या करते हुए कवि प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण एवं अंकन करता है। पंचम छवि को उपसंहार शीर्षक दिया गया है। इसमें कथा योजना बहुत कम हैं। प्रकृति वर्णन ही महत्त्वपूर्ण है। दुबे कृत 'चित्रकूट' में निर्वासित राम अपने अनुज एवं वधू के साथ चित्रकूट में कोल–किरातों को सांत्वना देते हैं। उन्हें मुनियों तथा ज्ञानियों का

दर्शन होता है। अयोध्या से आने का कारण बताया जाता है। चित्रकूटवासियों के पास राम के आगमन का संदेश आता है। 'मानस' के समान ही यह कथा है। फिर मंदाकिनी के हरितांचल में कुटिया बनती है, वहाँ लक्ष्मण और सीता के साथ राम का निवास होता है। यहाँ कैकेयी के प्रति आक्रोश भी व्यक्त हुआ है। ऋषि–मुनियों के साथ राम संस्कृति और विधि के विधान जैसे तथ्यों पर तार्किक चर्चा करते है। तृतीय सर्ग की कथा भरत के आगमन की सूचना पाकर लक्ष्मण के आवेश और उत्तेजना से प्रारंभ होती है। चित्रकूट में समस्त अयोध्या और मिथिला के वासियों का साथ–साथ जीवन प्रेम से भरा है। इसमें परिवर्तन इतना ही है कि यहाँ कैकेयी मुखर हैं और सौमित्र उर्मिला को दीप जलाना देखकर सहम जाते हैं। चतुर्थ सर्ग में श्रीराम दशरथ की मृत्यु के बाद श्राद्ध कर्म और पिण्डदान करते हैं। किरातिनियाँ लोक नृत्य दिखला कर सबका मनोरंजन करती हैं। भरत को गुरू वशिष्ट द्वारा मौन तोड़ने का आदेश होता है। राम भी उन्हीं के मुख से कुछ सुनना चाहते है। किन्तु इधर राम पिता की आज्ञा पाले और उधर भरत माताओं, प्रजाओं की सेवा करें। इसी पर पूरी सभा हामी भर देती हैं। पंचम सर्ग में सभी लौट–जाने की बात सोचते हैं।

'चित्रकूट चरित' में कथा शिविरों में विभक्त है। ये शिविर सर्ग के सूचक हैं। चित्रकूट की घाटी में आदिवासी शिविर लगा है। निषादराज युवजनों को समझाने की चेष्टा करते हैं, कि राम भरत के अनुयायी है अतः दोनों में भेद करने की कोई आवश्यकता नहीं। किन्तु युवक पन्द्रह दिनों के आपात्काल के समय क्रूर शासन को कैकेयी के माथे ही डालकर भविष्य को सोचनीय मानते हैं। इस पर निषाद और वाल्मीकि उन्हें समझाकर शांत कर देते हैं। मातृ शिविर में कैकेयी लोकलांछन को अपने लिए उज्ज्वल थाती मानती है। उसे यश–अपयश की परवाह नहीं उसने तो राम को रामायण के योग्य बनाने के लिए ही वन में निर्वासित होकर रहने की आज्ञा दी है। भरत सेवक हैं उनको भला राज्य से क्या मतलब। भरत अपने शिविर में चिन्तित हैं अतः सभी परमज्ञानी जनक के शिविर में जाते हैं जहाँ इस समस्या का समाधान संभव है। जनक सभी लोगों के साथ ऋषि शिविर में आते हैं। जहाँ वशिष्ठ, याज्ञवल्क्य, कौशिक, अत्रि, जाबाली आदि अनेक मतों के जानकार उपस्थित हैं। जब कोई मतैक्य नहीं हो पाता तो सभी मिलकर श्रीराम की शिविर की ओर चलते है जहाँ राम ध्यान में बैठे हैं। वहाँ भरत को वशिष्ठ के द्वारा यह आदेश होता है कि यह पादुका ही तुम्हारा अवलम्ब है, इसी को आधार बनाकर जीवन में धारण कर तुम रामभाव का वरण करो और वे पादुका प्राप्त कर अवध लौट आते हैं। इसमें स्रोत कथा अर्थात् वाल्मीकि रामायण से बहुत परिवर्तन किए गए हैं।

'शास्त्री' कृत 'चित्रकूट' करूण रस प्रधान खण्ड काव्य है। इसमें वस्तु विधान का सर्गानुरूप नियोजन हुआ है। इसका प्रारंभ चित्रकूट में सीता, राम और सौमित्र के पधारने की कथा से होता है। इनके प्रताप से हिंस्र जानवारों में भी अपनी प्रकृति की सर्वथा त्याग कर प्रेम को धारण किया है। अतीत की स्मृतियों में चित्रकूट की पूरी कथा को कल्पनाओं के माध्यम से प्रकट की गयी है फिर अनसूया आश्रम का वर्णन आता है। इन आश्रमों में यज्ञ, हवन, सत्संग आदि दिनचर्या से जुड़े हैं। सीता राम और लक्ष्मण इसी

वातावरण में समय बिता रहे हैं। चतुर्थ सर्ग में गुरू वशिष्ठ द्वारा दशरथ मरण को अनिवार्य बताते हुए अधंतापस की पूरी कथा वर्णित है। पंचम सर्ग में राघवेन्द्र कैकेयी को निर्दोष कहते हैं और हिदायत देते हैं कि कोई भी उन पर रोष न करे। वे चाहते हैं कि उपेक्षित कोल–किरातों, शबरों और निषादों की सेवा में भी वे अपने पितृ–शोक की विस्मृति का मार्ग ढूँढ़ें। फिर भरत ननिहाल से अयोध्या लौटने का वर्णन करते हैं। पष्ठ सर्ग में राम और भरत के वार्तालाप को सुमंत्र शोक विह्वल होकर सुनाते हैं। पश्चात् सुमंत्र राम को पहुँचाने के बाद अयोध्या आगमन की पूरी कथा कह डालते हैं। सातवें सर्ग में भरत के निवेदन पर विचारों का मंथन दिखाया गया है और राम उन्हें स्वयं पादुका प्रदान कर अयोध्या लौटा देते हैं। इस प्रकार कथा विधान की दृष्टि से इन काव्यों में स्रोत कथाओं में पर्याप्त परिवर्तन और परिशोधन के पश्चात् कथा के स्वरूप को गृहीत कर वर्णित किया गया है।

कथा विधान के पश्चात् चरित विधान का आयोजन हुआ है। इसमें पात्रों और चरित्र चित्रण के सम्बन्ध में मुख्य बात इतनी ही है कि यहाँ कवियों को कथा का आधार छोटा होने के कारण चरित्रों की विशेषताओं की व्याख्या करने का अवसर कम मिला है। बस पात्र के संकेत मात्र पर उनका चरित्र उजागर हुआ है। चरित्र भी अपना स्वयं विकास नहीं कर पाये हैं। चरित्रांकन के लिए कवियों ने प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों विधियों को अपनाया है। प्रत्यक्ष विधि के अन्तर्गत, मूलतः तथ्य प्रकाशन, वर्णन और अन्य पात्रों द्वारा कथन को महत्व मिला है। इसी प्रकार परोक्ष विधि के अन्तर्गत पात्रों के अभिभाषण कार्य और अन्य पात्रों पर अंकित प्रभाव को महत्व मिला है। चरित्रांकन में कवियों ने पात्रों के अन्तर्द्वद्व को भी महत्व दिया है। इसके अतिरिक्त संवादों के माध्यम से भी इनके भीतर के मर्म को उद्घाटित कराने की चेष्टा की गयी है। इसमें पुरूष और स्त्री चरित्र, मुख्य और गौण चरित्र सबकी व्यवस्था है। मुख्य पुरूष पात्रों में राम, भरत, जनक, वशिष्ठ, लक्ष्मण, सुमंत्र, वाल्मीकि आदि हैं। गौण पात्रों में निषादराज, कोल–किरात, आदिवासीजन एवं युवजन हैं। मुख्य स्त्री चरित्रों में कैकेयी, कौशल्या, सीता सुनयना आदि हैं। इन पात्रों का स्वरूप एक सिद्धान्त संस्कार के भीतर वर्णित है कि वे सभी राम के समान आचरण करें, रावण के समान नहीं। इसके अतिरिक्त विवेच्य ग्रंथों का कथा विस्तार पात्रों के समग्र जीवन से सम्बद्ध न होकर खण्ड विशेष तक सीमित है। अतः उनके गुण और शील स्वभाव की विशेषताओं को समग्र परिप्रेक्ष्य में न देखकर सीमित परिप्रेक्ष्य में ही विवेचित किया गया है।

लक्ष्मीकांत वर्मा रचित 'चित्रकूट' चरित, में श्रीराम नर और नारायण दोनों रूपों में अंकित हुए हैं। वे एक साथ ब्रह्म रूप में पूरी सृष्टि में रमे हुए हैं, विश्वमय हैं तो वे जन जन में, दीन दुखियों में, अवलम्बहीनों में भी अन्तर्भूत हैं। राम की लोकप्रियता सर्वत्र सुरक्षित है। पुरूष पात्रों के चरित्रांकन में युगानुकूल परिवर्तन लक्षित होते हैं। आदिवासियों के मन में वशिष्ठ का चरित्र कूटनीतिक का लगता है। चित्रकूट चरित में मुख्य स्त्री पात्र कैकेयी यह स्पष्ट कहती है कि उसने जो भी किया है वह राम के हित के लिए ही। भरत तो मात्र माध्यम बने। कैकेयी का चरित्रांकन कर्म की प्रतिमा के रूप में हुआ है। उनमें

सहज मातृत्व के गुण भी हैं। पर वह कर्त्तव्य के लिए ममत्व का बलिदान करती है। भले ही इसके लिए उसे लोक लांछन ही क्यों न सहना पड़े। इन काव्य ग्रंथों में मूल रामकथा की प्रासंगिक कथा को ही मुख्य कथा के रूप में स्वीकृत किया गया है। इसमें प्रमुख पात्रों की संख्या स्रोत कथाओं के सामान ही है। परन्तु गौण पात्रों की संख्या में विशेष वृद्धि हुई है। युगीन प्रभाव के कारण पर्याप्त परिवर्तन और परिवर्द्धन को कवियों ने स्वीकार किया है। कवियों ने अपनी कल्पनाशीलता का भी सहारा लिया है और सृजनकाल की युगीनता को निर्मित कृतियों में प्रतिव्यक्त किया है।

परिवेश, प्रतिबिम्बन एवं विचारधारा के क्रम में इन कृतियों में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा आध्यात्मिक परिवेश का प्रामुख्य के साथ वर्णन हुआ है। चित्रकूट में सम्बन्धित सभी कृतियों में तीन भिन्न–भिन्न समाज के लोगों का समागम हुआ है– अयोध्या का राज समाज, मिथिला नरेश जनक का समाज तथा चित्रकूट के वन प्रान्तर में निवास करने वाले अर्द्धसभ्य कोल–भील आदि जनजातियों का समाज। इससे अधिक समाज के प्रतिनिधित्व का अवसर भी यहाँ नहीं था। अयोध्या के सामाजिक परिवेश को विस्तार देना यहाँ अनावश्यक लगता। क्योंकि मिथिला और अयोध्या का समाज नैतिकता की दृष्टि से राम के स्नेह से वशीभूत होकर वहाँ एकत्र हुआ है। सामाजिक सम्बन्धों की मर्यादा के रक्षा के प्रति यह दोनों समाज संकल्पबद्ध है। इसी से सामाजिक रीति–नीति एवं संस्कारों की इन कृतियों में सजीव अंकन हुआ है। श्रीराम, लक्ष्मण और वैदेही के 'रामचरितमानस' में भी वार्ता क्रम में अयोध्या और जनकपुर चित्रकूट के संदर्भो से बार–बार जुट जाता है। इस समाज में शकुन–अपशकुन की चर्चा है। भरत और राम के स्नेह के अतिरिक्त उनका दशरथ के प्रति श्रद्धा भाव भी वर्णित है। अयोध्या और जनकपुर के सभी संस्कार समाज के परिवेश में घुले हुए नैतिकता और मर्यादा की रक्षा करने में समर्थ हैं। श्रीराम का संकल्प हिलता नहीं। वे यदि घर से निकल ही गये तो दीन–दलितों के दुःख का निवारण कर ही वापस लौटेंगे। वे माँ कैकेयी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हैं कि उनकी कृपा से ही जनता रूप जनार्दन का साक्षात्कार उन्हें हो सका है। दुर्दान्त दैत्यों के अनाचार अत्याचार की काली छाया को वे घूम–घूमकर निस्तेज करेंगे। उनके कथन में सर्वहारा वर्ग के प्रति सहानुभूति, निरक्षरता के विरूद्ध साक्षरता का प्रसार, कुपोषित नौनिहालों के प्रति दृष्टि तथा निर्धन ग्रामीणों के लिए चिकित्सीय सहायता की व्यवस्था आदि की प्राथमिकता झलकती है। उपेक्षित कोल–किरातों, शबरों और निषादों की सेवा में ही वे पितृ शोक की विस्मृति का मार्ग ढूँढ़ लेने की बात करते हैं। चित्रकूटवासियों के समाज में भावुकता तथा प्राकृतिक सौन्दर्य भरपूर है। वहाँ की दिनचर्या आश्रमों में व्यतीत होनेवाले यज्ञ, हवन सत्संग, महिमा तथा सेवा से युक्त है। चित्रकूट के कोल–किरात इन तीनों मूर्तियों की सेवा पूरी निष्ठा से करते हैं। वे उनके भोजन, भजन, भ्रमण, के साथ अयोध्यावासियों के लिए भी सबकी व्यवस्था करते हैं।

'चित्रकूट–प्रसंग' का मूल कारण राजनीतिक है, क्योंकि उसमें दशरथ एवं कैकेयी की मानवीय दुर्बलताएँ राजनीतिक नियमों का अतिक्रमण करतीं हैं। ज्येष्ठ पुत्र को राजनीति के अनुसार राज्याधिकार

मिलना चाहिए, किन्तु उसके स्थान पर उसका वन्य निर्वासन दशरथ की मृत्यु का कारण बनता है। चित्रकूट की सभा में राजनीतिक परिवेश पर धर्मानुशासन का वर्चस्व स्थापित हो जाता है, तथा राज्य और राजनीतिक नियमों को वहाँ हेय दृष्टि से देखा गया है। भरत राज्य को अनर्थ का कारण मानते हैं। सभी कृतियों में राजनीतिक समस्या का समाधान राम के द्वारा भरत को चरण पादुका देने और चौदह वर्ष की अवधि तक भरत द्वारा अयोध्या का शासन करने में समाधान पा लेता है। अतः विवेच्य समस्त कृतियों में प्रतिबिम्बित राजनीतिक परिवेश राजनीति पर धर्म के अनुशासन से रागात्मक हो जाता है। 'चित्रकूट चरित' में युवा पीढ़ी के माध्यम से विद्रोह तथा प्रजातांत्रिक मूल्यों की प्रतिष्ठा के विचारों को भी अनुस्यूत किया गया। किन्तु मुख्यतः मूल एवं ख्यात रामकथा का राजनीतिक परिवेश द्वारा सिद्धान्त रूप में विवेच्य कृतियों में रूपान्तरण हुआ है।

आध्यात्मिक परिवेश के विवेचन में सभी कृतियाँ अपनी मूल चेतना में प्राण तत्त्व के रूप में धर्म एवं अध्यात्म को समाहित किए हुए हैं। राम भले ही नर–लीला कर रहे हों, किन्तु उनमें परात्पर ब्रह्म की झाँकी सभी कृतियों में प्रतिबिम्बत हुई है। चित्रकूट की पवित्र पुण्यस्थली में आश्रमों की संस्कृति समस्त अध्यात्म की झाँकी प्रस्तुत करती है। धर्म की ज्योति उपासना एवं कर्मकाण्ड का धार्मिक वातावरण वहाँ सर्वत्र व्याप्त है। त्रिवेदी कृत 'चित्रकूट' काव्य में प्राणायाम, ध्यान, वेद–पाठ और कर्मकाण्ड सब कुछ एक साथ वहाँ दिखाया गया है। अहिंसा वृत्ति मनुष्य क्या जीव–जन्तुओं तक में व्याप्त है। सेवा भावना और परोपकार चित्रकूट वासियों की धमनियों में और शिराओं में प्रवाहित होता है। इन अध्ययनीय कृतियों में आध्यात्मिक परिवेश नैसर्गिक रूप से वर्णित हुआ है। अध्यात्म चिन्तन में मूलतः आत्मा–परमात्मा जीव जगत्, कर्ममार्ग, ज्ञानमार्ग तथा जन्म–जन्मांतर के हेतु रूप पाप–पुण्यों का विवेचन किया जाता है। मूल एवं ख्यात प्रसंगों में राम को परात्पर ब्रह्म निरूपित करते हुए उनकी नर–लीला का भी समानान्तर वर्णन हुआ है। इन कृतियों में भी औपनिषदक पद्धति पर आत्मा की अमरता का वर्णन हुआ है। जगत् के अस्तित्त्व सम्बन्धी चिन्तन पर विचारकों में मतभेद है किन्तु ख्यात प्रसंगों के अनुरूप ही इसका आध्यात्मिक परिवेश वर्णित हुआ है।

काव्य सौन्दर्य के विवेचन की दृष्टि से रामकथा को सानुबद्ध रीति से वर्णित करने वाले पारम्परित महाकाव्यों से ये कृतियाँ किंचित् भिन्न हैं। कोई लम्बी कविता है अर्थात् कथा काव्य, कोई करूण रस प्रधान खण्डकाव्य है, कोई शिविरों में नियोजित खण्ड काव्य है। फिर भी इनमें मानवीय संवेदना तथा हृदयस्पर्शी शैली के संयोग से काव्य शास्त्रीय तत्त्वों का भी सन्निवेश मिलता है। भक्ति परक दृष्टिकोण से देखने पर इन कृतियों में भक्ति रस की प्रधानता लक्षित होती है। शास्त्री कृत चित्रकूट का अंगीरस 'करूण' है और श्रेष्ठ कृतियों का अंगीरस 'शांत' है। यद्यपि प्रसंग वश उसमें श्रृंगार, हास्य तथा अद्भुत वीर रस के उदाहरण भी मिलते हैं। विवेच्य कृतियों की भाषा खड़ी बोली हिन्दी है और इनमें मुहावरे, कहावतों तथा सूक्तियों के सटीक प्रयोग मिलते हैं। भावों एवं घटनाओं को प्रकृति के सापेक्ष वर्णन क्रम में सादृश्यमूलक अंलकारों के प्रयोग की भी प्रवृत्ति यहाँ मिलती है। छन्दों में विशेष रूप से वीर छन्द का प्रयोग किया गया

है, किन्तु शास्त्री जी ने कई वर्णिक एवं मात्रिक छन्दों के साथ करूण रस से संपृक्त गीतों की भी योजना की है। इस प्रकार प्रायः सभी कृतियाँ काव्य सौन्दर्य की दृष्टि से आकर्षक हैं। 'चित्रकूट चरित' तो मुक्त छन्द में रचित है पर शेष कृतियाँ छन्दोबद्ध हैं। इन सभी में प्रसाद गुण सम्पन्नता और भाषा में पूर्ण प्रवाहमयता देखी जा सकती है। कुल मिलाकर 'चित्रकूट' संज्ञक कृतियों की मूल चेतना भक्ति है। तथापि वैयक्तिक रागात्मकता एवं संवेदना से भी ये कृतियाँ भरी हैं। इनमें एक ओर पारम्परीण जीवन एवं काव्य मूल्यों की रक्षा का प्रयत्न है तो दूसरी ओर उनमें आधुनिक चिन्तन का पुट और युगीन साहित्य परिवर्तन के लक्षण भी दिखाई पड़ते हैं।

समासतः ये कृतियाँ अपने काव्य सौन्दर्य और साहित्यिक महत्त्व के लिए इतिहास में अपना पृथक् स्थान बनाती हैं। इस शोधकार्य द्वारा 'वाल्मीकि रामायण' से लेकर आधुनिक काल के आठवें दशक की हिन्दी कविता में 'चित्रकूट' पर लिखे गये काव्यों, कविताओं और फुटकल संदर्भों की विवेचना की गई है। इसमें परम्परा और संस्कृति के तत्त्वों को खोजने का प्रयास किया गया है और इन काव्यों की विवेचना के क्रम में स्रोत ग्रंथ वाल्मीकि 'रामायण' और 'रामचरितमानस' से तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। जहाँ–जहाँ आधुनिकता प्रखर हुई है, वहाँ–वहाँ पारम्परिक सूत्रों से जोड़कर उसकी नव्यता के मार्ग को भी आलोकित किया गया है। कवियों की पृथक्–पृथक् संवेदना एक ही घटना प्रसंगों पर किस प्रकार व्यक्त हुई है उन्हें रेखांकित किया गया है। हमारे सामाजिक समादर्श किस प्रकार मानवतावाद और नये मानव मूल्यों में ढले हैं, उनका प्रतिगामी स्वरूप भी वर्णित है। इन चित्रकूट संज्ञक काव्य के रचयिताओं द्वारा पाठकों के मन में प्रेम, करूणा से संपृक्त सामाजिक आदर्शों की अर्गला को नये ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। हमारे राम इनमें कहीं धुँधले नहीं पड़े हैं बल्कि उनका तात्त्विक और मार्मिक रूप प्रकट हुआ है। उपेक्षित पात्रों को सही ढ़ंग से सांत्वना मिली है। ये काव्य आधुनिक युग की अमूल्य निधि हैं।

उपसंहार

संदर्भ तालिका

1. रामचरितमानस, गोस्वामी तुलसीदास, बालकाण्ड, दोहा–14/घ
2. गोस्वामी तुलसीदास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ.सं. 68
3. 'चित्रकूट', मोहनलाल गुप्त 'चातक', निवेदन